रात्रि क्लास 18-3-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है।

जैसे बाप में झाड़ और चक्र का ज्ञान है तुम बच्चों में भी ज्ञान है। वह भी स्वदर्शनचक्रधारी है तुम्हारी आत्मा भी स्वदर्शनचक्रधारी है। जैसे यह देहधारी वैसे तुम भी। यह भी संगम पर है तुम भी संगम पर हो। जैसे बाप ज्ञान का सागर है वैसे तुम भी हो। सृष्टि का चक्र तुम्हारे बुधि में फिरता रहता है। तुम्हारी भी आत्मा ज्ञान का सागर है। झाड़ को जानते हो। आत्मा सतोप्रधान थी अभी कम है तो याद की यात्रा से पूरा करते हैं। जब सतो प्रधान बन जाती है तो तुम्हारे में और बाप में कोई फर्क नहीं रहता। बाप टीचर है तुम भी टीचर हो ना। नालेज तो सभी हैं सिर्फ दैवीगुण चाहिए। बाबा में सभी दैवीगुण हैं। और जैसे वह अपने को अशरीरी समझते हैं तुमको भी समझना है। बच्चों को यह निश्चय है हम भी अशरीरी हैं। जैसे बाबा में ज्ञान है चक्र का वैसे तुम्हारे में भी है। सिर्फ उन में जैसे सतोप्रधान नहीं हो। बैटरी पूरी चार्ज न हुई है। पूरी होने तक दैवीगुण भी धारण कर लेंगे। तुम धारणा करते2 आखीरीन यह बन जावेंगे। एमआबजेक्ट तो है। पढ़ाने वाला भी कहते हैं मैं तुमको रजाओं का भी राजा बनाता हूं। बाप जैसे सम्पूर्ण बन जावेंगे। पहले हम सच्चे सम्बन्ध में थे फिर रावण-राज्य में झूठे सम्बन्ध में आये। अभी फिर सच्चे सम्बन्ध में जाना है। बाप ही की श्रीमत है। रावण की है झूठी मत। सभी मनुष्य गदहे मिशल हैं। गदहे बोझ उठाते हैं ना। तो मनुष्यों पर विकर्मों का बोझा है। उनको साफ करना है। ज्ञान और भक्ति में बहुत फर्क है। बोझ उतर जाता है फिर शरीर भी भासता नहीं है। शरीर भी पुराना है। धोबी मैला ले जाता है साफ कर ले आते हैं। बाबा भी धोबी है ना, सोनार भी है। कहते हैं तुम्हारी आत्मा को साफ करता हूं फिर शरीर भी शुध हो जाता है। कपड़ा साफ हो जाता है। अनेक नाम हैं। रावण राज्य में कोई से सुख नहीं मिल सकता। पहले2 कोस करना, काम कटारी चलाना सीखते हैं। साधु लोग भी कब कहते हैं यह छोड़ते जाओ। तुम बच्चों की बुधि रामराज्य और रावण राज्य है। मनुष्यों ने कल्प की आयु ही लम्बी लगा दी है। तो सभी बातें भूल गये हैं। बच्चों को सर्विस तो करनी है। सर्विस के लिए ट्रान्सलाईट चित्र अच्छी है। फिर बड़े आदमी भी चक्र लगाये आवेंगे। रिगार्ड तो मिलेगा ना। फिर आप्ते2 कहते तुम्हारी महिमा बढ़ती है। बाप तो बेहद का बादशाह है ना। डायरेक्शन देते हैं, पैसे का तो ख़याल नहीं। वह तो समर्थ है। शावनशाह की हुण्डी भरनी ही है। सभी प्रबन्ध हो जावेंगे। कोई बड़ी बात नहीं। पैसा का तो कब ख़याल न करना चाहिए। सर्विस की वृधि होती रहेगी। उस तरफ न जाकर तुम्हारे पास आ जावेंगे। यहां मुक्ति तो कोई को होती नहीं। वह सभी हैं भक्ति मार्ग के। बच्चों को बहुत सहज कर के समझाया है फिर भी धारण नहीं कर सकते हैं। यह स्कूल है ना। दिन प्रति दिन मोस्ट इजी लगता जावेगा। जितना योग में मदद उतना औरों को भी मदद मिलती जावेगी। सारा है योगबल। अच्छा फिर भी याद में बैठो।

यह आबू तो बहुत बड़ा तीर्थ बन जावेगा। क्योंकि जड़ और चैतन्य यहां है। मनुष्य देख बड़ा बन्दर खावेंगे। बाबा को ख़याल आता है लिख देवें सच्चा चैतन्य दिलवाला मंदिर। वह है जड़। यह तो बच्चे जानते हैं। झाड़ का भी राज़ समझाया है। इनका फाउन्डेशन है नहीं। तो बाकी सारा झाड़ खड़ा है। डास्टर कितने हैं। कोई बड़े कोई छोटे। डास्टर लटक2 धरती में जाकर जैसे थुर बन जाते हैं। फाउन्डेशन गुम हो गया है। जब फाउन्डेशन था तो डास्टरियां नहीं थी। अभी डास्टरियां है तो थुर नहीं। अभी फिर मैं फाउन्डेशन प्र लगा रहा हूं। विघ्न भी अनेक प्रकार के इस ज्ञान यज्ञ में पड़ते हैं। आहुति पड़ी है। बाप कहते हैं तुम जब तैयार हो जावेंगे फिर तो इस जंगल को आग लगेगी। फूलों के बगीचों को आग नहीं लगती है। कैसे2 बम्ब बनाते हैं। उन में गैस आदि भरते हैं जो कहीं भी गिरे तो और ही खत्म हो जाये। आग लग जाये। तूफान भी फिर आग को मदद करती है। इसको कहा जाता है इजी मौत। हार्ट एटैक इजी मौत है। दुःख नहीं होता।

तुम बच्चों को प्योर बनने का पुरुषार्थ भी जरूर करना है। योग पर बहुत अटेन्शन देना है। बाप कहते हैं मैं तुमको युक्ति बताता हूं पावन बनने की। नंगे आये हैं नंगे जाना है। बच्चों को मैं बच्चे2 कह बात करता हूं। वह है सभी आत्माओं का पिता। बाप नई प्रजा रचते हैं। वह पवित्र होते हैं। विकार में नहीं जाते। ओम।